श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

अर्गलास्तोत्रम् , दुर्गनाशनस्तोत्र (श्रीकृष्ण कृत), श्रीदुर्गापदुद्धारस्तोत्रम्

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

श्रीचण्डिकाध्यानम्

ॐ बन्धूककुसुमाभासां, पञ्चमुण्डाधिवासिनीम् ।
स्फुरच्चन्द्रकलारत्न- मुकुटां मुण्डमालिनीम् ॥1॥

त्रिनेत्रां रक्तवसनां, पीनोन्नतघटस्तनीम् ।
पुस्तकं(ञ्) चाक्षमालां(ञ्) च,
वरं(ञ्) चाभयकं(ङ्) क्रमात् ॥
दधतीं संस्मरेन्नित्य- मुत्तराम्नायमानिताम् ॥2॥

या चण्डी मधुकैटभादिदैत्यदलनी या माहिषोन्मूलिनी,
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथनी, या रक्तबीजाशनी ।
शक्तिः(श्) शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धिदात्री परा,
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता , मां पातु विश्वेश्वरी ॥3॥

अथ अर्गलास्तोत्रम्

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली, भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥1॥

भावार्थ : ॐ चंडिका देवी को नमस्कार है। मार्कण्डेय जी कहते हैं – जयन्ती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा – इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके! तुम्हें मेरा नमस्कार हो।

जय त्वं(न्) देवि चामुण्डे, जय भूतार्तिहारिणि।

जय सर्वगते देवि, कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥2॥

भावार्थ : देवी चामुण्डे ! तुम्हारी जय हो। सम्पूर्ण प्राणियों की पीड़ा हरने वाली देवी! तुम्हारी जय हो। सब में व्याप्त रहने वाली देवी! तुम्हारी जय हो। कालरात्रि! तुम्हें नमस्कार हो।।

मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥3॥

भावार्थ: मधु और कैटभ को मारने वाली तथा ब्रह्माजी को वरदान देने वाली देवी ! तुम्हे नमस्कार है। तुम मुझे रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो, जय (मोह पर विजय) दो, यश (मोह-विजय और ज्ञान-प्राप्तिरूप यश) दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

महिषासुरनिर्णाशि, भक्तानां सुखदे नमः।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥4॥

भावार्थ : महिषासुर का नाश करने वाली तथा भक्तों को सुख देने वाली देवी! तुम्हें नमस्कार है। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

रक्तबीजवधे देवि, चण्डमुण्डविनाशिनि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥5॥

भावार्थ : रक्तबीज का वध और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य, धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥6॥

भावार्थ: शुम्भ और निशुम्भ तथा धूम्रलोचन का मर्दन करने वाली देवी ! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि, सर्वसौभाग्यदायिनि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥7॥

भावार्थ : सबके द्वारा वन्दित युगल चरणों वाली तथा सम्पूर्ण सौभग्य प्रदान करने वाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

अचिन्त्यरूपचरिते, सर्वशत्रुविनाशिनि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥8॥

भावार्थ : देवी ! तुम्हारे रूप और चरित्र अचिन्त्य हैं। तुम समस्त शत्रुओं का नाश करने वाली हो। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

नतेभ्यः(स्) सर्वदा भक्त्या, चण्डिके दुरितापहे।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥9॥

भावार्थ : पापों को दूर करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारे चरणों में सर्वदा मस्तक झुकाते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं(न्) त्वां(ञ्) , चण्डिके व्याधिनाशिनि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥10॥

भावार्थ : रोगों का नाश करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते हैं, उन्हें तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

चण्डिके सततं(यँ) ये त्वा- मर्चयन्तीह भक्तितः।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥11॥

भावार्थ : चण्डिके ! इस संसार में जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी पूजा करते हैं उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

देहि सौभाग्यमारोग्यं(न्), देहि मे परमं सुखम्।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥12॥

भावार्थ : मुझे सौभाग्य और आरोग्य (स्वास्थ्य) दो। परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

विधेहि द्विषतां(न्) नाशं(वँ) , विधेहि बलमुच्चकैः।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥13॥

भावार्थ : जो मुझसे द्वेष करते हों, उनका नाश और मेरे बल की वृद्धि करो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

विधेहि देवि कल्याणं(वँ), विधेहि परमां श्रियम्।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥14॥

भावार्थ : देवी ! मेरा कल्याण करो। मुझे उत्तम संपत्ति प्रदान करो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

सुरासुरशिरोरत्न- निघृष्टचरणेऽम्बिके।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥15॥

भावार्थ : अम्बिके! देवता और असुर दोनों ही अपने माथे के मुकुट की मणियों को तुम्हारे चरणों पर घिसते हैं। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

विद्यावन्तं(यँ) यशस्वन्तं(लँ) , लक्ष्मीवन्तं(ञ्) जनं(ङ्) कुरु।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥16॥

भावार्थ : तुम अपने भक्तजन को विद्वान, यशस्वी, और लक्ष्मीवान बनाओ तथा रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने ,चण्डिके प्रणताय मे।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥17॥

भावार्थ : प्रचंड दैत्यों के दर्प का दलन करने वाली चण्डिके ! मुझ शरणागत को रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र- संस्तुते परमेश्वरि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥18॥

भावार्थ : चतुर्भुज ब्रह्मा जी के द्वारा प्रशंसित चार भुजाधारिणी परमेश्वरि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

कृष्णेन संस्तुते देवि, शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥19॥

भावार्थ : देवी अम्बिके ! भगवान् विष्णु नित्य-निरंतर भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते रहते हैं। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।

हिमाचलसुतानाथ- संस्तुते परमेश्वरि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥20॥

भावार्थ : हिमालय-कन्या पार्वती के पति महादेवजी के द्वारा प्रशंसित होने वाली परमेश्वरि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

इन्द्राणीपतिसद्भाव- पूजिते परमेश्वरि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥21॥

भावार्थ : शचीपति इंद्र के द्वारा सद्भाव से पूजित होने वाल परमेश्वरि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

देवि प्रचण्डदोर्दण्ड- दैत्यदर्पविनाशिनि।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥22॥

भावार्थ : प्रचंड भुजदण्डों वाले दैत्यों का घमंड चूर करने वाली देवी ! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश कर।

देवि भक्तजनोद्दाम- दत्तानन्दोदयेऽम्बिके।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥23॥

भावार्थ : देवी अम्बिके ! तुम अपने भक्तजनों को सदा असीम आनंद प्रदान करती हो। मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।

पत्नीं मनोरमां(न्) देहि, मनोवृत्तानुसारिणीम्।

तारिणीं(न्) दुर्गसंसार- सागरस्य कुलोद्भवाम्॥24॥

भावार्थ : मन की इच्छा के अनुसार चलने वाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो दुर्गम संसार से तारने वाली तथा उत्तम कुल में जन्मी हो।

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु, महास्तोत्रं पठेन्नरः।

स तु सप्तशतीसंख्या- वरमाप्नोति सम्पदाम्॥25॥

भावार्थ : जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करके सप्तशती रूपी महास्तोत्र का पाठ करता है, वह सप्तशती की जप-संख्या से मिलने वाले श्रेष्ठ फल को प्राप्त होता है और साथ ही वह प्रचुर संपत्ति भी प्राप्त कर लेता है।

॥ इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

दुर्गनाशनस्तोत्र (श्रीकृष्ण कृत)

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी, मूलप्रकृतिरीश्वरी ।

त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ, स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ॥1॥

हे देवी ! आप ही सबकी जननी, मूल-प्रकृति ईश्वरी हो, आप ही सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो। आप अपनी इच्छा से त्रिगुणमयी बनी हुई हो।

कार्यार्थे सगुणा त्वं(ञ्) च, वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् ।

परब्रह्मस्वरूपा त्वं , सत्या नित्या सनातनी ॥2॥

कार्यवश सगुण रूप धारण करती हो। वास्तव में स्वयं निर्गुणा हो। सत्या, नित्या, सनातनी तथा परब्रह्म स्वरूपा हो।

तेजःस्वरूपा परमा, भक्तानुग्रहविग्रहा ।

सर्वस्वरूपा सर्वेशा, सर्वाधारा परात्परा॥3॥

परमा तेजस्वरुपा हो। भक्तों पर कृपा करने के लिए दिव्य शरीर धारण करती हो। आप सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधारा एवं परात्परा हो।

सर्वबीजस्वरूपा च, सर्वपूज्या निराश्रया ।

सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा, सर्वमंगलमंगला ॥4॥

आप सर्वबीज-स्वरुप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो | आप सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मंगल करनेवाली एवं सर्वमंगलों का भी मंगल हो ।

सर्वबुद्धिस्वरूपा च, सर्वशक्तिस्वरूपिणी।

सर्वज्ञानप्रदा देवी ,सर्वज्ञा सर्वभाविनी ॥5॥

हे देवी ! आप सभी बुद्धियों का स्वरुप, सभी शक्तियों का स्वरुप, सभी ज्ञान प्रदान करने वाली, सब कुछ जानने वाली और सभी को उत्पन्न करने वाली हो।

त्वं स्वाहा देवदाने च, पितृदाने स्वधा स्वयम् ।

दक्षिणा सर्वदाने च, सर्वशक्तिस्वरूपिणी ॥6॥

देवताओं के लिए हविष्य दान करने के निमित्त आप ही स्वाहा हो, पितरों को श्राद्ध अर्पण करने के लिए आप ही स्वधा हो, सभी प्रकार के दान यज्ञों में दक्षिणा हो तथा सम्पूर्ण शक्तियां तुम्हारा ही स्वरुप हैं।

निद्रा त्वं(ञ्) च दया त्वं(ञ्) च , तृष्णा त्वं(ञ्) चात्मनः(फ्) प्रिया ।

क्षुत्क्षान्तिः(श्) शान्तिरीशा च , कान्तिः(स्) सृष्टिश्च शाश्वती ॥7॥

आप ही निद्रा, दया और मन को प्रिय लगने वाली तृष्णा हो। क्षुधा, क्षमा, शांति, ईश्वरी, कांति तथा शाश्वती सृष्टि भी आप ही हो।

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च, लज्जा शोभा दया तथा।

सतां सम्पत्स्वरूपा च, विपत्तिरसतामिह ॥8॥

आप ही श्रद्धा, पुष्टि, तन्द्रा, लज्जा, शोभा और दया हो। सत्पुरुषों के यहाँ संपत्ति और दुष्टों के घर में विपत्ति भी आप ही हो।

प्रीतिरूपा पुण्यवतां, पापिनां(ङ्) कलहाङ्कुरा ।

शश्वत्कर्ममयी शक्तिः(स्), सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥9॥

आप ही पुण्यवानों के लिए प्रतिरूप हो, पापियों के लिए कलह का अंकुर हो तथ समस्त जीवों की कर्ममयी शक्ति भी सदा आप ही हो।

देवेभ्यः(स्) स्वपदोदात्री, धातुर्धात्री कृपामयी ।

हिताय सर्वदेवानां, सर्वासुरविनाशिनी ॥10॥

देवताओं को उनका पद प्रदान करने वाली आप ही हो। धाता (ब्रह्मा) का भी धारण पोषण करने वाली दयामयी धात्री आप ही हो। सम्पूर्ण देवताओं के हित के लिए आप ही समस्त असुरों का विनाश करती हो।

योगनिद्रा योगरूपा, योगदात्री च योगिनाम् ।

सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां, सिद्धिदा सिद्धयोगिनी ॥11॥

आप योगनिद्रा हो, योग तुम्हारा स्वरुप है। आप योगियों को योग प्रदान करने वाली हो। सिद्धों की सिद्धि भी आप ही हो। आप सिद्धिदायिनी और सिद्धयोगिनी हो।

ब्रह्माणी माहेश्वरी च, विष्णुमाया च वैष्णवी ।

भद्रदा भद्रकाली च, सर्वलोकभयङ्करी ॥12॥

ब्रह्माणी, माहेश्वरी, विष्णु-माया, वैष्णवी तथा भद्रदायिनी भद्रकाली भी आप ही है। आप ही समस्त लोकों के लिए भय उत्पन्न करती हो।

ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी , गृहदेवी गृहे गृहे ।

सतां(ङ्) कीर्तिः(फ्) प्रतिष्ठा च, निन्दा त्वमसतां सदा ॥13॥

प्रत्येक गाँव में ग्रामदेवी और प्रत्येक गृह में गृहदेवी भी आप ही हो। आप ही सत्पुरुषों की कीर्ति और प्रतिष्ठा हो। दुष्टों की होनेवाली सदा निंदा भी तुम्हारा ही स्वरुप है।

महायुद्धे महामारी, दुष्टसंहाररूपिणी ।

रक्षास्वरूपा शिष्टानां, मातेव हितकारिणी ॥14॥

आप महायुद्ध में दुष्टसंहारूपिणी महामारी हो और शिष्ट पुरुषों के लिए माता की भांति हितकारिणी एवं रक्षारूपिणी हो।

वन्द्या पूज्या स्तुता त्वं(ञ्) च , ब्रह्मादीनां(ञ्) च सर्वदा ।

ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां(न्), तपस्या च तपस्विनाम् ॥15॥

ब्रह्मा आदि देवताओं ने सदा तुम्हारी वंदना, पूजा एवं स्तुति की है। ब्राह्मणों की ब्राह्मणता और तपस्वीजनों की तपस्या भी आप ही हो।

विद्या विद्यावतां(न्) त्वं(ञ्) च , बुद्धिर्बुद्धिमतां सताम् ।

मेधास्मृतिस्वरूपा च, प्रतिभा प्रतिभावताम् ॥16॥

विद्वानों की विद्या, बुद्धिमानों की बुद्धि, सत्पुरुषों की मेधा और स्मृति और प्रतिभाशाली पुरुषों की प्रतिभा भी तुम्हारा ही स्वरुप है।

राज्ञां प्रतापरूपा च , विशां(वँ) वाणिज्यरूपिणी ।

सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा त्वं, रक्षारूपा च पालने ॥17॥

राजाओं का प्रताप और वैश्यों का वाणिज्य भी आप ही हो। विश्वपूजिते ! सृष्टिकाल में सृष्टिरूपिणी तथा पालनकाल में रक्षा रूपिणी आप ही हो।

तथान्ते त्वं महामारी, विश्वस्य विश्वपूजिते ।

कालरात्रिर्महारात्रिर्- मोहरात्रिश्च मोहिनी ॥18॥

संहारकाल में विश्व का विनाश करनेवाली, महामारी रूपिणी भी आप ही हो। आप ही कालरात्रि, महारात्रि तथा मोहरात्रि हो।

दुरत्यया मे माया त्वं(यँ), यया सम्मोहितं(ञ्) जगत्।

यया मुग्धो हि विद्वांश्च, मोक्षमार्गं(न्) न पश्यति॥19॥

आप दुर्लंघ्य माया हो, जिसने सम्पूर्ण जगत को मोहित कर रखा है तथा जिससे मुग्ध हुआ विद्वान् पुरुष भी मोक्षमार्ग को नहीं देख पाता।

इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं(न्), दुर्गाया दुर्गनाशनम् ।

पूजाकाले पठेद्यो हि, सिद्धिर्भवति वाञ्छिता ॥20॥

इस प्रकार परमात्मा श्रीकृष्ण कृत दुर्गा के दुर्गम संकटनाशस्तोत्र का जो पूजाकाल में पाठ करता है, उसे मनवांछित सिद्धि प्राप्त होती है।

इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखंडे श्रीकृष्णकृतं(न्) दुर्गास्तोत्रम् संपूर्णम्।।

श्रीदुर्गापदुद्धारस्तोत्रम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे , नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।

नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥1॥

शरणागतों की रक्षा करने वाली तथा भक्तों पर अनुग्रह करने वाली, हे शिवे , आपको नमस्कार है । जगत को व्याप्त करने वाली विश्वरूपे, आपको नमस्कार है । हे जगत के द्वारा वंदित चरण कमलों वाली, आपको नमस्कार है । जगत का उद्धार करने वाली हे दुर्गे ,आपको नमस्कार है , आप मेरी रक्षा कीजिए।

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे ।

नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे , नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 2॥

हे जगत के द्वारा चिंत्यमानस्वरुपवाली, आपको नमस्कार है। हे महा योगिनी ,आपको नमस्कार है । हे ज्ञानरूपे, आपको नमस्कार है । हे सदानंदरूपे ,आपको नमस्कार है । जगत का उद्धार करने वाली हे दुर्गे ,आपको नमस्कार है ,आप मेरी रक्षा कीजिए।

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य , भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ।

त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 3॥

हे देवी , एकमात्र आप ही अनाथ , दीन , तृष्णा से व्यथित, भय से पीड़ित, डरे हुए बंधन में पड़े जीव को आश्रय देने वाली तथा एकमात्र आप ही उद्धार करने वाली हैं । जगत का उद्धार करने वाली हे दुर्गे! आपको नमस्कार है ,आप मेरी रक्षा कीजिए।

अरण्ये रणे दारुणे शुत्रुमध्ये- ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।

त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 4॥

हे देवी , वन में ,भीषण संग्राम में, शत्रुओं के बीच में, अग्नि में, समुद्र में, निर्जन विषम स्थान में और शासन के समक्ष एकमात्र आप ही रक्षा करने वाली हैं । आप ही संसार सागर से पार जाने के लिए नौका के समान हैं । जगत का उद्धार करने वाली हे दुर्गे ,आपको नमस्कार है ,आप मेरी रक्षा कीजिए।

अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां(न्) देहभाजाम् ।

त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुर्- नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 5॥

हे देवी , पाररहित ,महादुस्तर तथा अत्यंत भयावह विपत्ति- सागर में डूबते हुए प्राणियों की एकमात्र आप ही शरण स्थली हैं , उनके उद्धार की हेतु हैं । जगत का उद्धार करने वाली हे दुर्गे ,आपको नमस्कार है। आप मेरी रक्षा कीजिए।

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला- समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।

त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजं(न्), नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥6॥

अपनी प्रचंड तथा दुर्दंड लीला से सभी दुर्दम्य शत्रुओं को समूल नष्ट कर देने वाली हे चण्डिके! आपको नमस्कार है। हे देवी , आप ही एकमात्र आश्रय हैं और भवसागर से पार गमन की बीज स्वरुपा हैं। जगत का उद्धार करने वाली हे दुर्गे! आपको नमस्कार है ,आप मेरी रक्षा कीजिए।

त्वमेवाघभावाधृता सत्यवादीर्- न जाता जितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा ।

इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी , नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 7॥

आप ही पापियों के दुर्भाव ग्रस्त मन की मलिनता हटाकर सत्य निष्ठा में तथा क्रोध पर विजय दिलाकर अक्रोध में प्रतिष्ठित होती हैं । आप ही योगियों की इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों में प्रवाहित होती हैं । जगत का उद्धार करने वाली दुर्गे , आपको नमस्कार है ,आप मेरी रक्षा कीजिए।

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे ।

विभूतिः(श्) शची कालरात्रिः(स्) सती त्वं(न्) , नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 8॥

हे देवी, हे दुर्गे ,हे शिवे, हे भीमनादे , हे सरस्वती , हे अरुंधति , हे अमोघ स्वरुपे, आप ही विभूति, शची, कालरात्रि और सती हैं। जगत का उद्धार करने वाली दुर्गे , आपको नमस्कार है , आप मेरी रक्षा करें।

शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां,

मुनिमनुजपशूनां(न्) दस्युभिस्त्रासितानाम् ।

नृपतिगृहगतानां(वँ्) व्याधिभिः(फ्) पीडितानां(न्),

त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥ 9॥

हे देवी! आप देवताओं , सिद्धों , विद्याधरों ,मुनियों मनुष्यों ,पशुओं और लुटेरों से पीड़ित जनों की शरण हैं। राजा के बंदी गृह में डाले गए लोगों और व्याधियों से पीड़ित प्राणियों की एकमात्र शरण आप ही हैं । हे दुर्गे! मुझ पर प्रसन्न हों।

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्त- मापदुद्धारहेतुकम् ।

त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं(वँ्) वा, पठनाद् घोरसङ्कटात् ॥ 10॥

मुच्यते नात्र सन्देहो , भुवि स्वर्गे रसातले ।

सर्वं(वँ्) वा श्लोकमेकं(वँ्) वा , यः(फ्) पठेद्भक्तिमान् सदा ॥ 11॥

स सर्वं(न्) दुष्कृतं(न्) त्यक्त्वा , प्राप्नोति परमं पदम् ।

पठनादस्य देवेशि , किं(न्) न सिद्ध्यति भूतले ॥ 12॥

स्तवराजमिदं(न्) देवि, सङ्क्षेपात्कथितं मया ॥ 13॥

विपदाओं से उद्धार का हेतु स्वरुप यह स्तोत्र मैंने कहा । पृथ्वी लोक में ,स्वर्ग लोक में, पाताल लोक में , कहीं भी तीनों संध्या कालों अथवा एक संध्या काल में इस स्तोत्र का पाठ करने से प्राणी घोर संकट से छूट जाता है , इसमें कोई संदेह नहीं है । जो मनुष्य भक्ति परायण होकर संपूर्ण स्तोत्र को अथवा इसके एक श्लोक को ही पढ़ता है , वह समस्त पापों से छूट कर परम पद प्राप्त करता है । देवेशि! इसके पाठ से पृथ्वी तल पर कौन सा मनोरथ सिद्ध नहीं हो जाता, सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं । मैंने संक्षेप में यह स्तवराज आपसे कह दिया।

इति श्रीसिद्धेश्वरीतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे श्रीदुर्गापदुद्धारस्तोत्रम् संपूर्णम्।।